INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD)
© 2026 IJNRD | Volume 11, Issue 2, February 2026 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

प्राचीन भारतीय संस्कृति में अंतर्निहित पर्यावरण.शिक्षा

डॉ. बि. अमरनाथ शर्मा
संस्कृत प्राध्यापक
श्री वेंकटेश्वर कलाषाला
नई दिल्ली – 110021

प्रस्तावना :–किसी भी संस्कृति के स्वरूप का निर्धारण शिक्षा ही करती है। शिक्षा ही वह साधन है जिसके माध्यम से संस्कृति का जन्म होता है। उसका पुष्पन एवं पल्लवन होता है तथा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक उसका स्थानान्तरण होता है। संस्कृति की कल्पना एक सदैव प्रवाहमान नदी के रूप में की जा सकती है। लेकिन काल से सतत रूप से प्रवाहित होने वाली प्राचीन भारतीय संस्कृति आधुनिक काल तक आते-आते प्रदूषित हो चुकी है। जिस प्रकार पावन गंगा शहरी व औद्योगिक कचरे के मिलने से प्रदूषित हो गई है। ठीक उसी प्रकार प्राचीन भारतीय शिक्षा में परस्पर से अनेक विसंगतियाँ ने मिलकर भारतीय संस्कृति को दूषित कर दिया है। त्याग, चरित्र नैतिकता व सदाचार का स्थान स्वार्थ चरित्रहीनता अनैतिकता एवं भ्रष्टाचार ने ले लिया है। संस्कृति में मूल्य हीनता

.....की यह स्थिति इतनी विस्फोटक हो गई है कि इसमें त्वरित संशोधन अपेक्षित है तथा संस्कृति में संशोधन का यह कार्य केवल शिक्षा ही कर सकती है। इस दिशा में दृष्टिगत करने पर ज्ञात होता है कि संस्कृति व सभ्यता में क्षरण का प्रमुख कारण शिक्षा में पहुँच गयी। इसी कारण तत्कालीन भारतीय संस्कृति दयनीय स्थिति में पहुँच गई है। इसी समय भारतीय इतिहास में कुछ महान विभूमियों को उदभव हुआ। जिन्होंने इस स्थिति को पहचान कर इसके कारणों को समझा तथा इसमें सुधार की आवश्यकता पर बल दिया।

शिक्षा विज्ञान और प्रौद्योगिकी के इस युग में शिक्षा ही समाज के व्यक्तियों की सफलता, कल्याण और सुरक्षा के स्तर को निर्धारित करती है। शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास, सामाजिक और राष्ट्रीय प्रगति तथा सभ्यता और संस्कृति के उत्थान के लिए अनिवार्य है। भारतीय संस्कृति का स्वरूप दिन–प्रतिदिन अपनी पहचान खोता जा रहा था । ऐसे ही समय में जब संस्कृति अपनी व षिक्षा प्रणाली विदेषी है। साथ ही संस्कृति बाह्य सभ्यपताओं के प्रथर हो रहे है। तक किस प्रकार का समाज होगा। यह विचारणीय **प्रषन** है। कालांतर में भारतीय संस्कृति और शिक्षा के अन्योन्याचित सम्बधी को .....

सजीव बनाने वाले सम्बन्ध सूत्र एक-एक कर टूटते चले गये और परिवर्तन की स्वाभाविक लालसा ने विदेशी मान्यताओं के प्रति हमारी ललक को उत्तरोत्तर बढ़ते जाने के लिए प्रेरित किया। फलतः जीवन के हर क्षेत्र में आत्म-निर्भरता का हमारा चरित्र दूसरो पर निर्भर होने लगा और शुद्ध आग्ल स्वार्यो से विकसित शिक्षा प्रणाली, नागरिकों में भारतीयता के भावों को भरने व समाज के वांछित विकास में असफलता रही। परिणामस्वरूप आज इक्कीसवी सही के आरम्भ तक भी भारतीय संविधान में निरूपित परिकल्पनाओं का व्यावहारिकरण नहीं हो पाया है। जैसे समानता धर्म-निरपेक्षता, राष्ट्रीय एकता, भारतीयता का विकास, समाजवादी लोकतांत्रिकता आदि। इनसे उत्पक समस्याओं को ही चुनौती बानकर भारतीय शिक्षा प्रणाली को नवीन रूप देने का प्रयास 1986 की शिक्षा नीति में किया गया है।

सम्पूर्ण सामाजिक जीवन में नैतिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तन लाने के लिए शिक्षा एक समर्थ साधन है। यही वह कुंजी है जिसके द्वारा किसी भी राष्ट्र की प्रगति का मार्ग निवसंतक होता है। स्वामी विवेकानन्द, महर्षि दयानन्द सरस्वती जैसे अनेक विचारकों ने शिक्षा दर्शन को एक नया आयाम दिए है। इन विचारों की चुनौति केवल शिक्षा की संरचना के

.....प्रति ही नहीं वरन मनुष्य के मन, जीवन के स्वरूप तथा विषिष्टता के प्रति भी है। इन विचारकों ने ही जीवन की वस्तु स्थिति समझने की प्रति अन्तर्दृष्टि देने का प्रयास किया जो एक नई सम्मयता तथा समाज का सृजन कर सकती है।

पर्यावरण शब्द का अर्थ एवं परिभाषा– पर्यावरण शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है। परि + आवरण जिसका अर्थ है जो हमें चारों ओर से ढांके हुए है या आवृत किये हुए है। यह पर्यावरण है। Environment शब्द लेटिन भाषा के Environ से बना है । जिसका अर्थ है। Around अर्थात जो वस्तुएँ हमें चारों तरफ से घेरे हुए हैं। यह पर्यावरण से अन्तर्गत आती हैं।

आधुनिक पर्यावरणविदों ने पर्यावरण को इस प्रकार से परिभाषित किया है। पर्यावरण में वही सभी भौतिक, रासायनिक, जैविक एवं सांस्कृतिक कारक आते हैं। जो किसी भी तरह से जन्तुओं के जीवन को प्रभावित करते हैं।१

पर्यावरण में यह सब कुछ सम्मिलित किया जाता है। जो मनुष्य की जीवन पर्यन्त कार्य प्रणाली तथा जीवनशैली को प्रभावित करता है। मनुष्य के चारों ओर के सभी पक्षों को पर्यावरण में सम्मिलित किया जाता है। वह स्वतंत्र नहीं वरन यह अपनी

.....एक महत्वपूर्ण एवं उच्च स्थिति रखता है।

मनोवैज्ञानिकों ने पर्यावरण की परिभाषा इस प्रकार दी है।

बोरोन के अनुसार– एक व्यक्ति के पर्यावरण में यह सब कुछ सम्मिलित किया जाता है जो उसे जन्म से मृत्यु पर्यन्त तक प्रभावित करता है।१

एनेव एनास्टबी के अनुसार –व्यक्ति के वंषानुक्रम के अतिरिक्त वह सब कुछ पर्यावरण माना जाता है जो उसे प्रभावित करता है।१

वुडवर्थ के शब्दों में –पर्यावरण शब्द का अभिप्राय उन सभी बाहरी शक्तियों और तत्वों से जो व्यक्ति को आजीवन प्रभावित करता है।१

हॉलैण्ड तथा डगलस के अनुसार– जीवन जगत के प्राणियों के विकास परिपस्वता प्रकृति व्यवहार तथा जीवन शैली को प्रमाणित करने वाले बाह्य समस्त शक्तियों परिस्थितियों तथा घटनाओं को पर्यावरण में सम्मिलित किया जाता है और उन्हीं की सहायता से पर्यावरण का वर्णन किया जाता है।१

फिटिंग (जर्मन) – पारिस्थितिकी कारकों का योग पर्यावरण है।१

इस प्रकार शिक्षा मनुष्य की आन्तरिक शक्तियों का सर्वांगीण अर्थात मन वृद्धि और आत्मा का विकार है।

अध्ययन की आवश्यकता व महत्व– आज के संदर्भ यदि हम देखें जैसे मानव जाति ने वैष्विक स्तर पर ज्ञान और विज्ञान के क्षेत्र में उन्नति की है उसी अनुपात में मानव जाति आध्यात्म से दूर होती गई है। सृष्टि के भक्ति भाव में हारम होता गया है परन्तु यह भक्तिभाव ही है जो व्यक्ति के ज्ञान और विज्ञान के स्वार्थमय क्षेत्र से निकालकर सम्पूर्ण मानव जाति के हित में सोचने व कार्य करने के लिए प्रेरित करता है जिसके कारण मनुष्य में पर्यावरण चेतना जाग्रत होती है।

निष्कर्ष –मानव समाज किस समय कौन-सी समस्या से ग्रस्त होता है और उसके निदान के लिए समाज के सदस्यों की भूमिका एवं सहभागिता एवं शासकीय प्रयासों की तुलना में अधिक उस समाज के सांस्कृतिक मूल्य अधिक प्रभावी होते हैं। इस सन्दर्भ में भारतीय संस्कृति के आधार पुरातन ग्रंथ, वेद, उपनिषद, पुराण, रामायण के साथ विष्लेषण अव्यंत लाभप्रद हो सकता है।

अतः भारतीय प्राचीन संस्कृति में निहित पर्यावरण शिक्षा अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो सकता है । तथा समाज में पर्यावरण प्रेम का उद्भव भी संभव होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- शर्मा वी. एल. — पर्यावरण शिक्षा, कविता प्रकाशन (2006)
- तुलसीदास के काव्य में नैतिक मूल्य — चरनदास शर्मा, भारतीय ग्रंथ निकेतन नई दिल्ली।
- विद्यानिवास मिश्र — रामायण का काव्यमर्ग प्रभात अध्ययन, प्रकाशन आसफ अली रोड, नई दिल्ली (2001)
- वाल्मीकि रामायण — गीत प्रेस, गोरखपुर।
- श्रीवास्तव एम. पी. (1998) — प्राचीन अधभुत भारत की संस्कृति,श्री सरस्वती प्रकाशन, इलाहाबाद।
- सानू के. सी. (1992) — “पर्यावरण शिक्षा के संप्रत्यय व प्रत्यक्षीकरण का समालोचनात्मक अध्ययन।”
- देश पाण्डे वी. एम. (1994) — राधा कृष्ण के शैक्षिक विचारों का योगदान।

Copyright & License:

© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.